**E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi**

# अभिज्ञानशाकुन्तलम् के द्वितीय अङ्क का सारांश

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

द्वितीय अङ्क में सर्वप्रथम विदूषक प्रवेश करता है। वह शिकार के व्यसनी राजा दुष्यन्त की मैत्री से दुःखी है इसलिये वह किसी प्रकार राजा से आज का अवकाश ग्रहण करने के विषय में सोचता है। इतने में ही यथोक्त सेवकों सहित प्रियासक्त राजा प्रवेश करता है। विदूषक राजा से एक दिन का विश्राम चाहता है। उधर राजा का भी मन शकुन्तला का निरन्तर स्मरण आने के कारण शिकार से हट सा गया है।

विदूषक के निवेदन से सहमत होकर वह सेनापति को आदेश देता है कि वह जंगली पशुओं को एकत्र करने के लिये निकले हुये सेवक वर्ग को लौटा ले। इसके बाद परिजन वर्ग चला जाता है।

विदूषक के साथ राजा एकान्त में वृक्ष की छाया से निर्मित वितान के नीचे शिलापट्ट पर बैठ जाता है। वहीं पर वह शकुन्तला के प्रति अपनी आसक्ति के विषय में विदूषक को इङ्गित करता है तथा आश्रम में एक बार और जाने के लिये उससे कोई व्याज ढूंढने को कहता है। इसी समय दो तपस्वी ऋषिकुमार आ जाते हैं। वे (ऋषिकुमार) यज्ञ में विघ्न उत्पन्न करने वाले राक्षसों के निवारणार्थ राजा से आश्रम में आने का निवेदन करते हैं। अपने मनोऽनुकूल निमन्त्रण को राजा स्वीकार कर लेता है और रथारूढ़ होकर विदूषक के साथ आश्रम की ओर प्रस्थान करता है। इतने में ही नगर से करभक नामक सेवक आता है, जो सन्देश देता है कि महारानी की आज्ञा है कि 'आगामी चौथे दिन उनके (महारानी के) उपवास की पारणा होगी। उस समय आयुष्मान् दुष्यन्त माता को अवश्य सम्मानित करें'।

राजा चिन्ता-निमग्न हो जाता है कि 'वह तपस्वियों का कार्य करे अथवा गुरुजनों की आज्ञा का पालन करें'। काफी सोच-विचार कर माता के द्वारा पुत्र रूप में माने गये विदूषक को हस्तिनापुर भेज देता है। हस्तिनापुर में माता को सन्देश भेजता है कि इस समय वह तपस्वियों के कार्य में व्यग्रचित्त है। अतः उसका वहाँ आना सम्भव नहीं है। उसे यह भय है कि विदूषक चञ्चलतावश कहीं उसके प्रणय प्रसङ्ग को अन्तःपुर में न कह दे। अतः वह विदूषक से शकुन्तला के प्रति अपनी आसक्ति को सही न मानने के लिये आग्रह करता है।